

## पद १४८

(राग: छक्कड - ताल: केहरवा)

छी: होगोनि मूढा इदे निंदु तिळवळकी। दृश्य देहक्के नोडी नाने  
देह अंदु सोक्की। ब्रह्म हुली नी इद्दु मायि कुरी हिंद सिक्की।  
सुखसाम्राज्य निधि नी, बिडु ई विषय सुख भिक्की। ई माया केळो  
यारक्की। ता शुन्यवागी काणक्की। निजआत्मदल्ली हूटकी।

शिवभक्तरिगे सण्णक्की। अज्ञानी जनके दोड्डाकी। आगी चलवक्की  
बिळुताळतक्की। चिन्मातार्ताड ब्येळकिगे मायितो मायद चुक्की ॥१॥